Str. 1388, 41. Calc. Ausg. B. und D. म्राह्मस्, die Scholien: म्र-मत्यहा: । म्रम्बा ऽपि ।

Str. 1389, 45. Calc. Ausg. वक्रमेदो ।

Str. 1390, 50. Calc. Ausg. und D. समाकर्षी नु ohne च, die Scholien wie wir.

Str. 1391, 53. 54. Die Scholien: द्वा द्वा वा भिनार्थावित्यन्ये।

Str. 1392, 58. Calc. Ausg. und E. स्पेत: 1

Str. 1393, 59. Calc. Ausg. und B. बलात, die Scholien wie wir.

Str. 1394, 65. Calc. Ausg. und D. पीते नीलः, die Scholien wie wir.

Str. 1395, 68. B. und E. माजिष्टा, die Scholien wie wir.

Str. 1396, 72. Calc. Ausg. und D. शाव:, E. स्याव:, die Scholien wie wir.

Str. 1397, 73. Calc. Ausg. und E. कहु:, B. कहु:, D. कहू:, die Scholien: कत्कुत्सितं द्रवति कहु: (sic)। क्रिपीतेति डिड:। — Calc. Ausg. und D. कडारस्तु, die Scholien wie wir. — 74. Dieselhen: मेचक: शिखिकएठाभ इति डर्ग:।

Str. 1400, 81. Die Scholien: रावा राप ।

Str. 1401, 83. 84. Die Scholien: षड्या जायते षड्गः। यद्याडिः। काण्ठाइत्तिष्ठते व्यक्तं (षड्गः) षड्यस्तु जायते। काण्ठारस्तालुनासाभ्या जिद्धाया दशनादिष ॥ स्थानात्त्रात्तात्वात् यदाक् व्याडिः।

वायुः समुच्चितो नाभेः कारुशोर्षसमाकृतः । नदन्वषभवत्तस्मात्तेनैष मृषभः स्मृतः ॥